

7. भक्ति - पद

उन्मुखीकरण :

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौ पाय।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

I. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. भगवत भक्ति का ज्ञान कौन देता है?

उ. भगवत भक्ति का ज्ञान गुरु देता है।

प्र.2. गुरु को किससे श्रेष्ठ बताया गया है? क्यों?

उ. गुरु को भगवान से श्रेष्ठ बताया गया है। क्योंकि भगवत भक्ति का ज्ञान हमें गुरु ने ही दिया है।

प्र.3. 'निराडंबर भक्ति भावना' का क्या महत्व है?

उ. सच्चा भक्त निराडंबर होता है। वह भगवान की उपासना सच्चे हृदय से करता है। न की ठाठ-बाट से।

उद्देश्य :-

छात्रों को प्राचीन साहित्य से अवगत कराते हुए उनमें काव्य रचना की विविध

शैलियों का ज्ञान कराना है। भारतीय साहित्य व संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न कर निराडंबर भक्ति मार्ग का महत्व बताना है।

विधा विशेष :

इसमें एक चौपाई और एक पद है। चौपाई मात्रिक सम छंद है। चौपाई और पद विशेष लय और ताल से गाये जाते हैं। जो बच्चों के रागात्मक मन को छू लेते हैं। चौपाई छंद चार पंक्तियों का होता है, इसकी प्रत्येक पंक्ति में सोलह मात्राएँ होती हैं।

विषय प्रवेश :

प्राचीन काल से ही भगवन-स्मरण भगवत-भक्ति को महत्व दिया गया है। भगवान के नाम रूपी नाव से ही संसार रूपी सागर से तर सकतें हैं। इसकी सही राह का मार्गदर्शन गुरु द्वारा होता है। ऐसी ही भक्ति संबंधी रैदास की चौपाइयाँ और मीराबाई के पद हम इस पाठ के अंतर्गत पढ़ेंगे।

कवि परिचय :

कवि - रैदास

जीवनकाल - सन् 1482 - सन् 1527

प्रसिद्ध रचना - 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इनके पद संकलित हैं। विशेष - ज्ञानमार्ग शाखा के प्रमुख कवियों में से एक।

कवयित्री - मीराबाई

जीवनकाल - सन् 1498 - सन् 1573

प्रसिद्ध रचना - मीराबाई पदावली

विशेष - कृष्णोपासक कवयित्रियों में श्रेष्ठ। माधुर्य भाव प्रयोग

शब्दार्थ : रैदास

- | | | | | | |
|----------|---|-------|----------|---|-------|
| 1. प्रभु | = | भगवान | 2. जाकि | = | जिसके |
| 3. बास | = | गंध | 4. समानी | = | समाना |
| 5. घन | = | बादल | 6. मोरा | = | मोर |

7. चितवहि = देखना
8. चकोर = एक पक्षी
9. सोनहि = सोना
10. स्वामी = मालिक
11. दासा = दास

शब्दार्थ : मीराबाई

1. म्हें = में
2. रतन = रत्न
3. धन = सम्पत्ति
4. अमोलक = अनमोल
5. म्हारे = हमारे
6. किरपा = कृपा
7. पूँजी = धन
8. खोवायो = खोना
9. खरच = खर्च
10. खूहै = कम, घटना
11. लूटै = लूटना
12. बढन = बढ़ना
13. सवायो = एक चौथाई
14. खेवटिया = केवट
15. भवसागर = संसार रूपी सागर
16. तर = पार करना
17. गिरिधर = श्रीकृष्ण
18. नागर = चतुर
19. हरख = हर्ष, खुशी
20. जस = यश
21. पायो = पाना

प्रश्नोत्तर :

प्र.1. प्रभु के प्रति रैदास की भक्ति कैसी है?

उ. रैदास भक्तिकाल के कवि है। रैदास ज्ञानाश्रयी शाखा के निर्गुण भक्तिधारा के कवि हैं। ये ईश्वर को स्वामी और अपनेआप को दास समझकर ईश्वर की भक्ति करते हैं। इस प्रकार प्रभु के प्रति रैदास की भक्ति दास्य भक्ति है।

प्र.2. कवि ने अपने आप को मोर क्यों माना होगा?

उ. घने बादलो को देखकर मोर आनंद विभोर होकर नाचता है। उसे काले बादलो से प्रेम है। उसी प्रकार रैदास भगवान रूपी बादल को देखकर आनंद विभोर हो जाता है। इसलिए कवि ने अपने आपको मोर माना होगा।

प्र.3. संत किसे कहते हैं?

उ. जो व्यक्ति हमेशा परमार्थ में लगा रहता है, जिसमें सात्विक गुण हो, जो ईश्वर भक्त हो उसे संत कहते हैं। वह लोगों को, भक्तों को शिष्यों को भगवान का मुक्ति पाने का रास्ता बताता है।

प्र.4. श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति कैसी है?

उ. श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति प्रेम प्रधान माधुर्य भाव की है। वह माधुर्य भाव से अपने प्रभु श्रीकृष्ण का गुण-गान किया करती थी।

अर्थग्राहता - प्रतिक्रिया :

अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1. रैदास व मीरा की भक्ति भावना में क्या अंतर है?

उ. रैदास व मीरा दोनों हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग माने जाने गले भक्तिकाल के प्रमुख कवि हैं। रैदास मीरा के गुरु हैं और मीरा रैदास की शिष्या थी। रैदास निर्गुण भक्ति धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं। उनकी भक्ति भावना निर्गुण दास्य या सख्य भाव की है। जबकि मीराबाई की भाक्ति-भावना सगुण है। मीरा कृष्ण भक्ति शाखा की कवयित्री हैं। मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की है। वह श्रीकृष्ण को अपना प्रति मानकर उनका गुण-गान किया करती थी।

प्र.2. हमारे जीवन में भक्ति भावना का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।

उ. हमारे जीवन में भक्ति भावना का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। भक्ति से मनुष्य में सात्विक गुणों का विकास होता है। भक्ति भावना के कारण व्यक्ति ईश्वर की भक्ति में लीन रहकर सादगी भरा जीवन बिताता है। भक्ति से हृदय के क्लेश समाप्त हो जाते हैं। भक्ति से शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। भक्ति से मनुष्य को जीवनमुक्ति होने का मार्ग मिलता है।

आ. पंक्तियाँ उचित क्रम में लिखिए।

1. प्रभुजी, तुम पानी हम चंदन।
प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी।
2. मीरा के प्रभु नागर गिरिधर, हरख-हरख पायो जस॥
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख-हरख जस पायो॥

इ. नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

1. सत की नाँव केवटिया सतगुरु, भवसागर तर जायो

उ. **प्रसंग** - प्रस्तुत पंक्ति भाक्ति-पद-मीराबाई से दी गयी है। जिसकी कवयित्री मीराबाई है।

भाव : मीराबाई सतगुरु ईश्वर की महिमा बताते हुए कहती है कि, ईश्वर ही सत्य है।

ईश्वर नाम के सहारे हो हम जीवन रूपी सागर पार कर सकते हैं। ईश्वर भक्ति ही जीवन रूपी भवसागर से मुक्तिदिलप्ते है।

2. प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग

उ. **प्रसंग :** प्रस्तुत पंक्ति भक्ति-पद रैदास से ली गयी है जिसके कवि रैदास है।

भाव: रैदास ईश्वर से कहते है कि हे! प्रभु - आप चंदन के समान श्रेष्ठ है। आप हरे एक व्यक्ति के अंदर निवास करते है। आपको अनुभव किया जा सकता है जिस प्रकार चन्दन के सम्पर्क में आकर पानी भी सुगंधित हो जाता है उसी प्रकार मेरे जैसे तुच्छभक्त आपके निकट आकर आपका गुण-गान कर धन्य हो जाते है।

ई. पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(इज्जतण गठुद टततट्टु से करवाए)

सृजनात्मक - अभिव्यक्ति

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

प्र.1. रैदास जी ने ईश्वर की तुलना चंदन, बादल और मोती से की है। आप ईश्वर की तुलना किससे करना चाहेंगे? और क्यों?

उ. हम ईश्वर की तुलना, दानी, स्वामी माँ-बाप, गुरु मित्र से करना चाहेंगे। क्योंकि

ईश्वर दीनों पर दयाकरने वाले है। ईश्वर दानी है तो मै भिखारी हूँ। ईश्वर स्वामी है तोमैं सेवक हूँ। इतना हो नही ईश्वर माँ-बाप, गुरु मित्र सब प्रकार से हमारा हित करने वाले है।

प्र.2. मीरा की भक्ति भावना कैसी है? अपने शब्दों में लिखिए।

उ.

मीरा भक्तिकाल की कृष्णोपासक कवियों में प्रसिद्ध कवयित्री है। मीरा बचपन से ही कृष्ण की भक्ति करती थी। मीरा कृष्ण को अपना पति मान कर भक्ति भावना में लीन रहकर भक्ति पद गाया करती थी। उनकी भक्ति माधुर्य भक्ति है। वे कृष्ण से प्रेम करती थी।

प्र.3. 'मीरा के पद' का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उ.

प्रस्तुत पद में मीराबाई गुरु की महिमा का गुणगान किया है। मीराबाई कृष्ण भक्ति शाखा की प्रसिद्ध कवयित्री है। उनकी भक्ति माधुर्यभाव की है। रैदास जी उनके गुरु माने जाते है। प्रस्तुत पद में मीराबाई ने गुरु की महिमा का गुणगान किया है मीरा कहती है कि मैंने तो अपने गुरु की कृपासे राम रत्न रूपी धन को पाया है। मेरे गुरु ने मुझे भक्तिरूपी अमूल्य वस्तु दी है। जो मेरे जन्म-जन्म की पूँजी है जिसे मैंने संसार में लुटा दिया है। प्रभु-भक्ति ऐसी पूँजी है जिसे चोर भी नहीं चुरा सकता उसे जितना खर्च करो वह उतना ही बढ़ता जाता है। जीवन रूपी सत्य की नाव के केवट मेरे गुरु हैं जिसके सहारे में संसार रूपी भव सागर को पार कर लूंगी मेरे तो प्रभु चतुर गिरिधर गोपाल है जिसका यश मैं झूम झूम कर गा रही हूँ।

इ. भक्ति भावना से संबंधित छोटी सी कविता का सृजन कीजिए।

उ. छात्र स्वयं करे

ई. भक्ति और मानवीय मूल्यों के विकास में भक्ति साहित्य किस प्रकार सहायक हो सकता है?

उ.

हमारे जीवन में भक्ति और मानवीय मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। भक्ति और मानवीय मूल्यों एक दूसरे के पूरक हैं। भक्ति से ही मनुष्य में मानवीय मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। भक्ति साहित्य भक्ति और मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का प्रमुख माध्यम है। इनकी रचना का प्रमुख उद्देश्य ही लोगों को भक्ति मार्ग पर लाकर समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना करना है। आज के वर्तमान युग में इनका महत्व सर्वोपरि है क्योंकि आधुनिक समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास बड़ी तीव्र गति से हो रहा है। इसलिए भक्ति और मानवीय मूल्यों के विकास में भक्ति साहित्य अनेक प्रकार से सहायक हो सकता है।

भाषा की बात :

अ. सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. प्रभु, पानी, चंद्र (वाक्य प्रयोग कीजिए) पर्यायवाची शब्द लिखिए)
 1. प्रभु - मेरे **प्रभु** दयालु है। (पर्याय शब्द - भगवान ईश्वर, स्वामी)
 2. पानी - पानी जीवन का मूलाधार है। (पर्यायवाची - जल, नीर, वारि)
 3. चंद्र - रात में **चंद्र** रोशनी देता है। (पर्यायशब्द - चाँद, चंदा, शशि, सोम)

2. स्वामी, गुरु, दिन (विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए)

1. स्वामी × सेवक /दास

वाक्य : हनुमान श्रीराम के सेवक थे और राम उनके स्वामी थे।

2. गुरु × शिष्य

वाक्य : गुरु कहानी सुनाते हैं तो शिष्य कहानी सुनता है।

3. दिन × रात

वाक्य : हम दिन में जगते हैं और रात में सोते हैं।

3. चंदन, सबी, भख्ती (वर्तनी सही कीजिए)

चंदन - चंदन

सबी - सभी

भख्ती - भक्ति

आ. सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. बन, रतन, किरपा (तत्सम रूप लिखिए)

बन - वन

रतन - रत्न

किरपा - कृपा

2. जग, नाँव, अमोलक (अर्थ लिखिए)

जग - दुनिया

नाँव - नौका

अमोलक - अमूल्य

इ. वचन बदलकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. मोती सागर में मिलता है।

उ. मोती सागर में मिलते हैं।

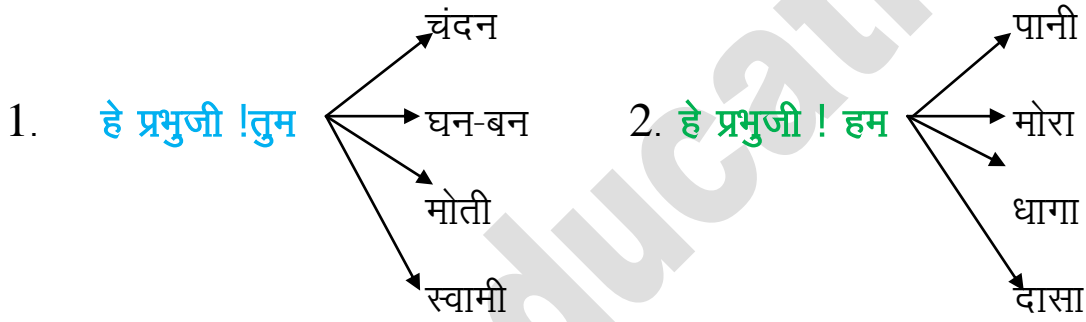
2. धागे से माला बनती है।

उ. धागे से मालाएँ बनती हैं।

3. मोर सुन्दर पक्षी है।

उ. मोर सुंदर पक्षी है।

ई. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। पाठ के अनुसार उचित शब्द लिखिए।



2. **छंद** : कविता में प्रयुक्त होने वाले वर्ण, मात्रा, यति आदि के संगठन को छंद कहते हैं।

चौपाई छंद एक मात्रिक सम छंद है। जिसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण : | | S | | S | | | | S S

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी

S S | | | | S | | S S

जाकी अँग अँग बास समानी

I I S II II II II S S

प्रभुजी तुम घन-बन हम मोरा

S S I II I S I S S

जैसे चितवहि चंद्र चकोरा

Sakshieducation.com